EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 15, Issue 1, January - June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com

"शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन"

डॉ आरती गुप्ता[1], पूजा[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी. एड. एम. एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

किसी भी इंसान की मूलभूत जरुरत रोटी, कपडा और मकान है। जिसके भी पास ये सब है वह ख़ुशी और सरल तरीके से अपनी ज़िंदगी व्यतीत करता है। लेकिन जैसे जैसे इंसान ज़िंदगी में आगे बढ़ता जा रहा है उसकी जरूरते बदलती जा रही है। वह जरुरत के सामान के स्थान को अपने शोक और दिखावे में बदलता जा रहा है। जिसमे युवा सबसे आगे है, वह दूसरों से ज्यादा दिखने की होड़ में फैशन को अपनी ज़िंदगी का अहम् हिस्सा बना चूका है।

आज समाज के लगभग प्रत्येक वर्ग पर फैशन का प्रभाव किसी न किसी रूप में देखा जा सकता है किंतु युवावर्ग विशेषकर शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत छात्राएँ इस प्रवृत्ति से सबसे अधिक प्रभावित दिखाई देते हैं। शैक्षणिक संस्थानों में छात्राएँ अपने पहनावे, स्टाइल और ट्रेंड्स के माध्यम से अपनी पहचान बनाती हैं। यह फैशन प्रवृत्तियाँ उनके शैक्षणिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहार, मनोवैज्ञानिक व्यवहार, आत्मविश्वास, मानसिक स्थिति और शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावित करती हैं।

मुख्य शब्द:- फैशन प्रवृत्ति, शैक्षणिक व्यवहार, महाविद्यालय, सामाजिक व्यवहार, मनोवैज्ञानिक व्यवहार

प्रस्तावना

वर्तमान समय को यदि फैशन और अभिव्यक्ति का युग कहा जाए तो यह बिल्कुल उचित होगा। आधुनिक समय में फैशन केवल कपड़ों और बाहरी दिखावे तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह व्यक्तित्व, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। विशेष रूप से छात्राओं में फैशन प्रवृत्तियाँ तेजी से विकसित हो रही हैं। फैशन केवल वस्त्रों, आभूषणों या बाहरी साज-सज्जा तक सीमित नहीं रहा है यह व्यक्ति की पहचान, सोच, आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति का प्रतीक बन गया है। सामाजिक पहचान न केवल एक सामाजिक भावनात्मक बंधन है, बल्कि एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक संसाधन भी है जो व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है। शोध से पता चला है कि सामाजिक पहचान किसी व्यक्ति की खुशहाली, आत्म-प्रभावकारिता और मनोवैज्ञानिक लचीलेपन की भावना को बढ़ा सकती है।

शैक्षणिक संस्थान केवल शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक विकास और व्यक्तित्व निर्माण के भी केंद्र हैं। यहाँ विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि अपने दृष्टिकोण, व्यवहार और सामाजिक मूल्यों का भी विकास करते हैं। इस प्रक्रिया में फैशन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है, क्योंकि यह छात्राओं के आत्म-सम्मान, सामाजिक संबंधों और सामूहिक व्यवहार को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। पश्चिमी समाज में जहाँ फैशन को स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति का प्रतीक माना जाता है, वहीं भारतीय संदर्भ में यह आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने का माध्यम बन गया है।

यह संतुलन न केवल व्यक्ति की सोच को दर्शाता है बल्कि समाज के बदलते मूल्य-मानदंडों का भी सूचक है। जो छात्राएँ फैशन को आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं, वे सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी, सक्रिय और सामाजिक रूप से जुड़ाव रखते हैं। किन्तु जब फैशन "प्रतिष्ठा" या "प्रतिस्पर्धा" का प्रतीक बन जाता है, तो यह मानसिक दबाव और तुलना की भावना को जन्म देता है, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को भी प्रभावित कर सकती है।

शैक्षणिक संस्थान सामाजिक मूल्य निर्माण का केंद्र होते हैं, जहाँ समानता, अनुशासन और सामूहिकता को महत्व दिया जाता है। फैशन की बढ़ती प्रवृत्ति कई बार इन मूल्यों के सामने चुनौती प्रस्तुत करती है। यूनिफॉर्म जैसे नियम समानता का प्रतीक हैं, परंतु कुछ संस्थान व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता को भी प्रोत्साहित करते हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच संतुलन स्थापित करना शिक्षा व्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी बन गई है, क्योंकि फैशन न केवल छात्राओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह उनके सामाजिक और मानसिक संतुलन को भी प्रभावित कर सकता है।

1. अध्ययन का औचित्य

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फैशन ने अपनी गहरी छाप छोड़ी है। समाज का हर वर्ग किसी न किसी रूप में फैशन से जुड़ा हुआ है, किंतु युवावर्ग, विशेष रूप से शैक्षणिक संस्थानों के छात्राओं, इस प्रवृत्ति से सबसे अधिक प्रभावित दिखाई देते हैं। विद्यालय और महाविद्यालय केवल शिक्षा प्राप्त करने के स्थान नहीं हैं, बल्कि ये ऐसे सामाजिक मंच हैं जहाँ विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, अपनी सोच का विस्तार करते हैं और समाज में अपनी पहचान बनाते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि फैशन प्रवृत्तियाँ छात्राओं के व्यवहार, दृष्टिकोण और व्यक्तित्व विकास को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

फैशन अब केवल पहनावे तक सीमित नहीं रहा है; यह विद्यार्थियों की सोच, आत्म-अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान का हिस्सा बन गया है। आधुनिक छात्राएँ अपने व्यक्तित्व को निखारने, भीड़ में अलग दिखने और साथियों के बीच स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए फैशन को अपनाते हैं। यह प्रवृत्ति कभी-कभी सकारात्मक परिणाम देती है जैसे आत्मविश्वास में वृद्धि, रचनात्मकता का विकास और आत्म-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। लेकिन दूसरी ओर यह प्रतिस्पर्धा, तुलना और हीनता की भावना जैसी नकारात्मक स्थितियाँ भी उत्पन्न कर सकती है, जो विद्यार्थियों के व्यवहार और मानसिक संतुलन को प्रभावित करती हैं। छात्राओं के इसी व्यवहार की पुस्टि करने के लिया शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन जरुरी है, क्योकि आधुनिक समय की छात्राएं और उनका ज्ञान जान कल्याण के लिए जरुरी है।

2. सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

1. **पूनम सक्सेना (2014)** ने "वर्तमान समय में युवा लड़कियों का फैशन के प्रति बढ़ता रूचि व रुझान (बरेली शहर पर आधारित)" पर अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) फैशन का युवा लड़कियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना। (ii) युवा लड़कियों का फैशन के प्रति दृष्टिकोण को जानना। निष्कर्ष:- (i) समय के साथ परंपरागत पहनावे की जगह आधुनिक फैशन ने ले ली है। आज के समय में फैशन का प्रभाव तेज़ी से बढ़ रहा है और यह अब आम लोगों के अधिकारों, जीवनशैली और सोच के क्षेत्र में अपनी मजबूत जगह बना चुका है।

2. **सोनिया यादव (2016)** ने "कॉलेज परिसर में छात्रों के वस्त्र पहनने के व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन" किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) लिंग के संदर्भ में छात्रों के वस्त्र पहनने के व्यवहार के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना। (ii) उनके अध्ययन पाठ्यक्रमों के आधार पर वस्त्र व्यवहार के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण की तुलना करना। निष्कर्ष:- (i) वर्तमान अध्ययन साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देता है, जो हमारे कॉलेज छात्रों के वस्त्र पहनने के व्यवहार को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायक है।

3. **प्रज्ञा सुब्बा (2020)** ने "कॉलेज के युवाओं की सामाजिक गतिशीलता पर फैशन प्रवृत्तियों के प्रभाव का अध्ययन: दार्जिलिंग में एक केस अध्ययन" किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) दार्जिलिंग के युवाओं पर फैशन प्रवृत्तियों के प्रभाव को समझना। (ii) उनके सामाजिक समूह और सामाजिक अंतःक्रियाओं पर फैशन के प्रभाव को समझना। निष्कर्ष:- (i) फैशन, सामाजिक पहचान और आपसी अंतःक्रियाओं के बीच सूक्ष्म संबंध को समझकर संबंधित पक्ष युवाओं की आवश्यकताओं और पसंदों को अधिक प्रभावी ढंग से समझ व संबोधित कर सकते हैं।

4. **कस्तूरी.जे.शेट्टी, डॉ. सुफला कोटियन (2022) ने** "फैशन का युवाओं पर मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव पर एक केस अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) कपड़ों का चयन करते समय युवाओं पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभाव को समझना। (ii) युवा किशोरों के फैशन उत्पादों की खरीद व्यवहार पर आर्थिक प्रभाव और मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझना। निष्कर्ष:- (i) किशोरों के आस-पास रहने वाले लोग उन पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं, क्योंकि युवा महसूस करते हैं कि उन्हें अच्छा दिखना चाहिए और अपने आसपास प्रचलित फैशन ट्रेंड का हिस्सा बनना चाहिए। (ii) किशोर अपनी बाहरी उपस्थिति के प्रति अधिक सजग होते हैं और यह आत्मचेतना उन्हें दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रेरित करती है।

5. **एलीशा चिका अन्यानवु और सिरिल एनामेलेक चियाना (2022) ने** "विश्वविद्यालय के छात्रों के फैशन उपभोग व्यवहार पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव" पर अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) स्नातक छात्रों के बीच फैशन उपभोग पर संस्कृति का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव है या नहीं, इसका निर्धारण करना। (ii) स्नातक छात्रों के बीच फैशन उपभोग पर सामाजिक वर्ग का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव है या नहीं, इसकी जाँच करना। निष्कर्ष:- (i) इस अध्ययन में यह पाया गया कि अध्ययन किए गए छह सामाजिक-सांस्कृतिक कारक—संस्कृति, मत-नेतृत्व (Opinion Leadership), परिवार, सामाजिक वर्ग, संदर्भ समूह तथा जातीयता—चयनित स्नातक छात्रों के फैशन उपभोक्ता व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

6. **सीती हिदायह, श्री मिनार्ती (2025)** ने "विश्वविद्यालय के छात्रों के सामाजिक व्यवहार पर फैशन प्रवृत्तियों का प्रभाव: एक इस्लामी शैक्षिक दृष्टिकोण" पर अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य था:- (i) इस्लामी विश्वविद्यालय के संकाय में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक

व्यवहार पर फैशन प्रवृत्तियों के प्रभावों का अध्ययन करना। (ii) फैशन प्रवृत्तियों के छात्रों की आत्म-जागरूकता, नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण और व्यक्तिगत पहचान (पर्सनल ब्रांडिंग) पर पड़ने वाले प्रभावों की पहचान करना। निष्कर्ष:- (i) इस्लामी सिद्धांतों के साथ संयोजित फैशन प्रवृत्तियाँ छात्रों को आत्म-जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं, विशेष रूप से उस पहचान और उन मूल्यों के प्रति, जिन्हें वे अपने पहनावे की शैली के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते हैं।

3. साहित्य विवेचना

प्रस्तुत शोध में शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के शैक्षणिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है- **पूनम सक्सेना (2014), सोनिया यादव (2016), प्रज्ञा सुब्बा (2020), कस्तूरी.जे.शेट्टी, डॉ. सुफला कोटियन (2022), एलीशा चिका अन्यानवु और सिरिल एनामेलेक चियाना (2022), सीती हिदायह, श्री मिनार्ती (2025)** अतः प्रत्येक शोध अध्ययन में फैशन प्रवृत्तियों के प्रति छात्राओं के व्यवहार पर अध्ययन किये गए है। लेकिन फैशन प्रवृत्तियों के प्रति छात्राओं के व्यवहार कैसा है इसका परिणाम संतोशजनक नहीं है। इसलिए "शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन"नामक शीर्षक अध्ययन के रूप में लिया गया।

4. समस्या का कथन

"शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन"

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं के बीच कौन-सी फैशन प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं और वे इन प्रवृत्तियों को किस दृष्टि से अपनाते हैं।
2. फैशन का प्रभाव छात्राओं के शैक्षणिक व्यवहार किस प्रकार पड़ता है?
3. फैशन प्रवृत्तियाँ छात्राओं के सामाजिक व्यवहार किसी प्रकार प्रभावित करती हैं।
4. फैशन के कारण छात्राओं का मनोवैज्ञानिक व्यवहार कैसे विकसित होता है।
5. मीडिया और सोशल मीडिया छात्राओं की फैशन समझ और व्यवहार को किस प्रकार दिशा प्रदान करते हैं।
6. फैशन किस प्रकार छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक बनता है और किन स्थितियों में यह उन्हें सामाजिक या मानसिक रूप से प्रभावित करता है।

6. कार्यप्रणाली

A. शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध के लिए अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा।

B. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा अलवर जिले की बी एड की 200 छात्राओं को न्यादर्श की रूप में चयनित किया है।

C. शोध में प्रयुक्त उपकरण

I. **वैधता:-** वैधता के लिए संरचनात्मक वैधता विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत शोधार्थी ने अपनी स्वनिर्मित प्रश्नावली को विशेषज्ञ से जांच करवाई है।

II. **विश्वसनीयता:-** विश्वसनीयता निकलने के लिए शोधार्थी ने "आंतरिक क्षेत्र विश्वसनीयता" का प्रयोग किया है। इस विधि के अंतर्गत यह जांचा जाता है की एक ही परीक्षण के विभिन्न हिस्से एक-दूसरे से कितने संबंधित हैं। यह विशेष रूप से छात्राओं के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में प्रश्नों की गुणवत्ता और उनके आपसी संबंध को जांचने के लिए किया गया है।

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किआ गया है। जिसमे 32 प्रश्नो (8 फैशन प्रवृत्ति, 8 शैक्षणिक व्यवहार, 8 सामाजिक व्यवहार, 8 मनोवैज्ञानिक व्यवहार) को सम्मिलित किया गया है। जिनके उत्तरो के अंक निर्धारित किये गए।

- बहुत अधिक / हमेशा / पूर्ण सहमत →4 अंक
- अधिक / कभी कभी / सहमत →3 अंक
- बहुत कम / असहमत →2 अंक
- बिलकुल नहीं / कभी नहीं / पूर्ण असहमत →1 अंक

D. सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में साख्यिकी के रूप में मध्यमान और सह संबंधन का प्रयोग किया गया है।

7. डाटा विश्लेषण

तालिका -1
उद्देश्य: शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व शैक्षणिक व्यवहार में सहसंबंध पाया जाता।

क्र. सं.		न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	सहसम्बन्ध
1	फैशन प्रवृत्ति	200	39.62	38.36	0.54 मध्यम धनात्मक सहसम्बन्ध
2	शैक्षणिक व्यवहार	200	41.66	30.24	

तालिका -2
शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व सामाजिक व्यवहार में सहसम्बन्ध पाया जाता।

क्र. सं.		न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	सहसम्बन्ध
1	फैशन प्रवृत्ति	200	39.62	38.36	0.74 मध्यम धनात्मक सहसम्बन्ध
2	सामाजिक व्यवहार	200	36.18	43.96	

तालिका -3
शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व मनोवैज्ञानिक व्यवहार में सहसम्बन्ध पाया जाता।

क्र. सं.		न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	सहसम्बन्ध
1	फैशन प्रवृत्ति	200	39.62	38.36	0.67 मध्यम धनात्मक सहसम्बन्ध
2	मनोवैज्ञानिक व्यवहार	200	40.26	41.66	

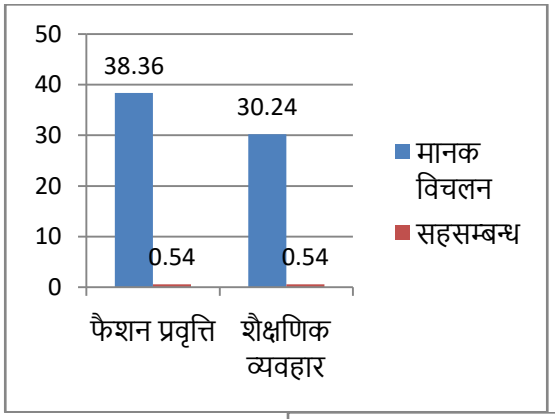

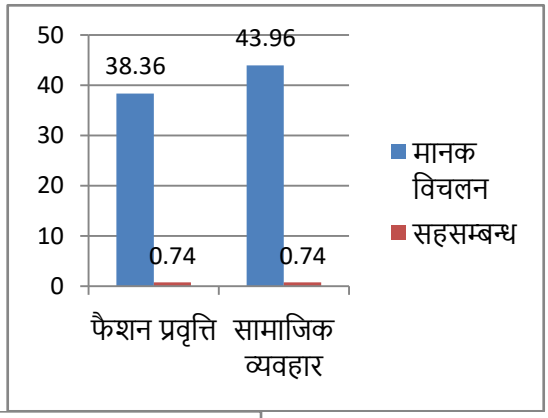

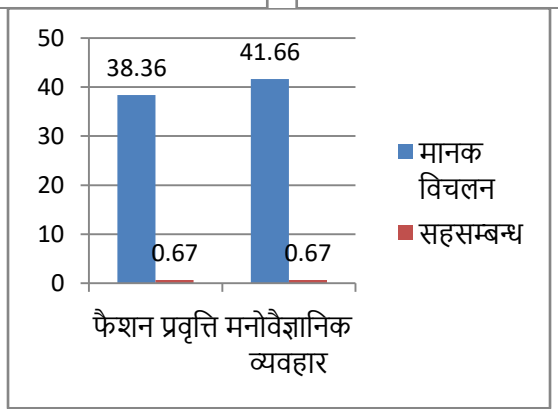

उपर्युक्त तालिका-1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति का मध्यमान 39.62 व शैक्षणिक व्यवहार का मध्यमान 41.66 है जबकि फैशन प्रवृत्ति का मानक विचलन 38.36 व शैक्षणिक व्यवहार का मानक विचलन 30.24 है। जिसका सहसम्बन्ध का मान 0.54 है। अर्थात सहसम्बन्ध का मान 0.25 से 0.75 के मध्य है, अतः फैशन प्रवृत्ति का छात्राओं के शैक्षणिक व्यवहार पर मध्यम धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त तालिका-2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति का मध्यमान 19.81 व सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 18.09 है जबकि फैशन प्रवृत्ति का मानक विचलन 19.18 व सामाजिक व्यवहार का मानक विचलन 21.98 है। जिसका सहसम्बन्ध का मान 0.74 है। अर्थात सहसम्बन्ध का मान 0.25 से 0.75 के मध्य है, अतः फैशन प्रवृत्ति का छात्राओं के सामाजिक व्यवहार पर मध्यम धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त तालिका-3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति का मध्यमान 19.81 व मनोवैज्ञानिक व्यवहार का मध्यमान 20.13 है जबकि फैशन प्रवृत्ति का मानक विचलन 19.18 व सामाजिक व्यवहार का मानक विचलन 20.83 है। जिसका सहसम्बन्ध का मान 0.67 है। अर्थात सहसम्बन्ध का मान 0.25 से 0.75 के मध्य है, अतः फैशन प्रवृत्ति का छात्राओं के मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर मध्यम धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

8. परिणाम

शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व शैक्षणिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.54 है। शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.74 है। शैक्षणिक संस्थानों में छात्राओं की फैशन प्रवृत्ति व मनोवैज्ञानिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.67 है।

निष्कर्ष:-

फैशन के चलते छात्राएं महाविद्यालय के नियमो का पालन कम करती है। फैशन और शैक्षणिक व्यवहार के बीच संबंध ज्यादा मजबूत नहीं है। फैशन के प्रति रूचि शैक्षणिक प्रदर्शन कोई गहरा प्रभाव नहीं डालती। फैशन अपनाने की होड़ छात्राओं की पढाई को प्रभावित करती है, लेकिन फैशन शैक्षणिक व्यवहार को बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं करता है। फैशन प्रवृत्ति और सामाजिक व्यवहार में संबंधन बहुत अच्छा है। फैशन प्रवृत्ति और सामाजिक व्यवहार में संबंधन बहुत अच्छा है। जो छात्राएँ फैशन के प्रति अधिक सजग होती हैं, वे सामाजिक रूप से भी सक्रिय, आत्मविश्वासी और प्रभावी होती हैं। फैशन उनके व्यक्तित्व को निखारने में मदद करता है, जिससे वे समाज में बेहतर ढंग से घुल-मिल पाती हैं। फैशन छात्राओं को मित्र बनाने में सहायता करता है। एवं फैशन प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। फैशन के प्रति जागरूकता छात्राओं के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व और मानसिक संतुलन को बेहतर बनाने में सहायक होती है। क्योकि फैशन अपनाने से छात्राओं को अपने व्यक्तित्व को व्यक्त करने में आसानी होती है साथ ही मानसिक संतोष भी बढ़ता है। फैशन ट्रेंड्स के साथ चलने से छात्राओं को जीवन में मान सम्मान और उपलब्धिया मिलती है।

9. शैक्षिक निहितार्थ

- सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया में महाविद्यालय स्तर की शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राए समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आते है, जिनका व्यवहार अलग अलग होता है। इन्ही व्यवहार के कारण प्रत्येक छात्रा की छवि एक दूसरे से अलग बनती है।
- इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध अध्ययन "शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृत्तियों का छात्राओं के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन" का चयन किया।
- वर्तमान समय में फैशन ने छात्राओं के शैक्षणिक व्यवहार पर अपनी पकड़ बना ली है। जिसके कारण उनके शैक्षणिक व्यवहार में दिन प्रतिदिन बदलाव देखने को मिलते है। जिससे फैशन प्रवृत्ति व शैक्षणिक व्यवहार में संबंध कम पाया जाता है। इसी के साथ फैशन प्रवृत्ति और सामाजिक व्यवहार में संबंधन बहुत अच्छा है। और फैशन प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह पता लगा सकते है की शैक्षणिक संस्थानों में फैशन प्रवृतियों का छात्राओं के शैक्षणिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहार व मनोवैज्ञानिक व्यवहार पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा।

अतः हम कह सकते है कि प्रस्तुत शोध छात्राओं में फैशन के प्रति उनकी रूचि और इससे उनके शैक्षणिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहार व मनोवैज्ञानिक व्यवहार में आए बदलाव को ज्ञात करने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय पारसनाथ (1993), अनुसन्धान परिचय, उत्तेर प्रदेश, आगरा, चावला एंड संस।
2. सुखीया सी.पी. एवं मल्होत्रा (1999), शैक्षिक अनुसंधान के मूल्य तत्व, उत्तेर प्रदेश, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,
3. कपिल, एच.के. (2020), सांख्यिकी के मूलय तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर
4. सरीन एवं सरीन (2007), शैक्षिक अनुसंधान विधियों, उत्तेर प्रदेश, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,
5. शर्मा आर. ए. (2011) सम्बन्धित शोध साहित्य की समीक्षा, उत्तेर प्रदेश, मेरठ, आर. लाल, बुक डिपो,
6. रायजादा बी.एस. (1997) सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा, जयपुर ,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकामदी
7. पूनम सक्सेना ने "वर्तमान समय में युवा लड़कियों का फैशन के प्रति बढ़ता रूचि व रुझान (बरेली शहर पर आधारित)" Periodic Research VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
8. Soniya Yadav "A Study of Students' Attitude toward Clothing Behavior in College Campus" International Journal of Research ISSN: 2348-6848 Vol-3, Special Issue-6
9. PRAGGYA SUBBA ""Exploring The Influence Of Fashion Trends On Collegiate Youth Social Dynamics: A Case Study In Darjeeling" International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) © 2024 IJCRT | Volume 12, Issue 5 May 2024 | ISSN: 2320-2882
10. Kasturi.J.Shetty and Dr. Suphala Kotian "PSYCHOLOGICAL & SOCIAL IMPACT OF FASHION ON YOUNG ADOLESCENTS- A CASE STUDY" International Research Journal of Modernization in Engineering Technology and Science Volume:04/Issue:08/August-2022

वेब लिंक

1. https://askfilo.com/user-question-answers-smart-solutions/write-an-essay-of-between-250-and-300-words-topic-teenagers-3337333936313830
2. https://askfilo.com/user-question-answers-smart-solutions/nibndh-vidyaarthiyon-pr-phaishn-kaa-prbhaav-3335363235383433
3. https://www.frontiersin.org/journals/psychology/articles/10.3389/fpsyg.2026.1773948/full
4. https://www.vaishalimahilacollegehajipur.ac.in/wpcontent/uploads/2022/02/file_6210c8fde0f01.pdf